गांधीवादी विचार

GANDHIAN THOUGHTS

Volume-II

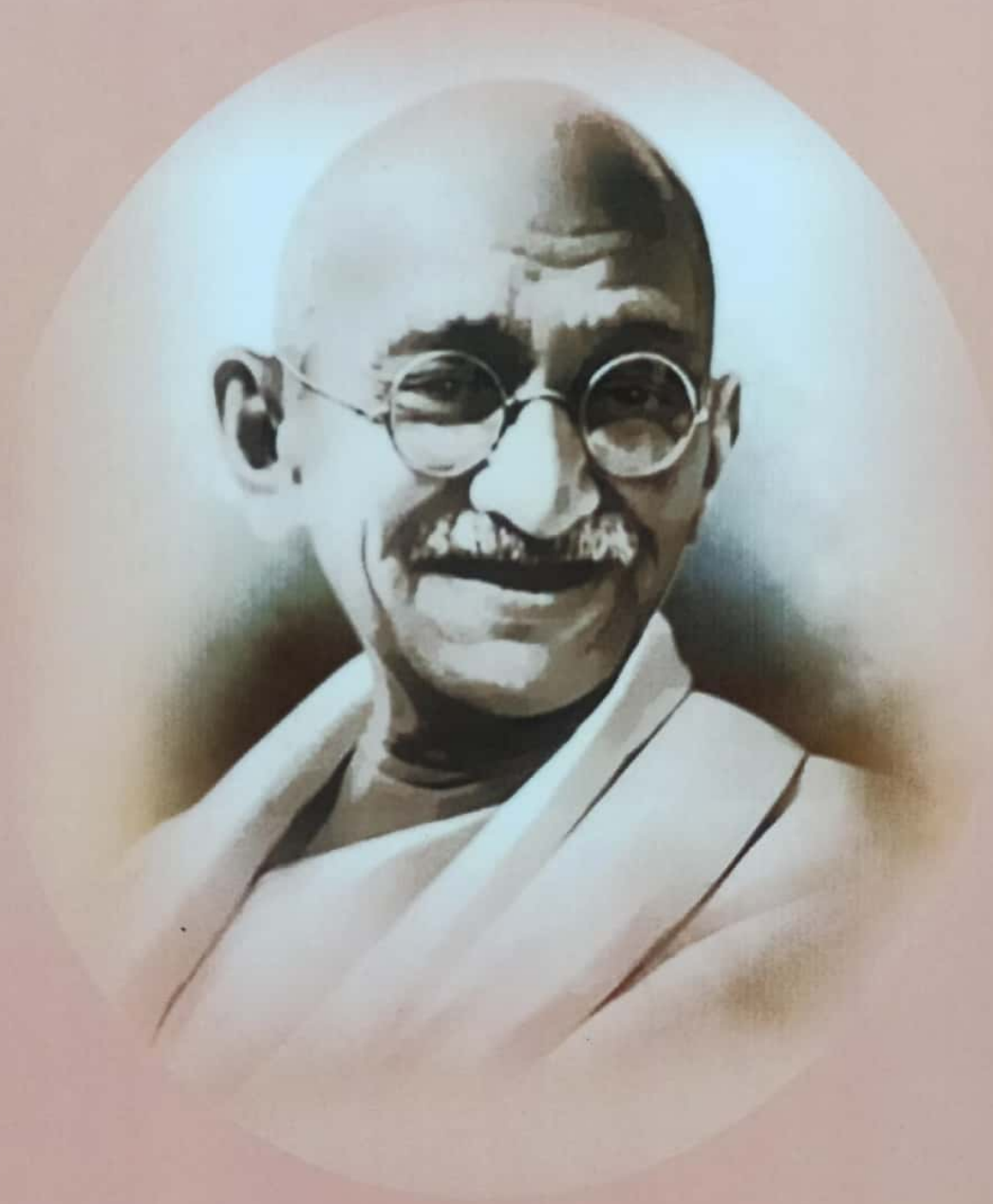

संपादक

डॉ. बाळासाहेब जी. जोगदंड

Scanned with CamScanner

गांधीवादी विचार

संपादक

प्रा.डॉ. बाळासाहेब जी. जोगदंड

सहयोगी प्राध्यापक,

पदवी व पदव्युत्तर राज्यशास्त्र विभाग,

सीताबाई कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अकोला.

आधार पब्लिकेशन्स, अमरावती

Scanned with CamScanner

गांधीवादी विचार

■ प्रा.डॉ. बाळासाहेब जी. जोगदंड

■ प्रथम आवृत्ती – २ ऑक्टोंबर

© प्रकाशक व संपादक

■ प्रकाशक

आधार पब्लिकेशन, अमरावती.

हनुमान मंदिराजवळ, पाठ्यपुस्तक मंडळा समोर,

वि.म.वि.कॉलेज मागे, अमरावती

मो. ९५९५५६०२७८

email- aadharpublication@gmail.com

■ मुखपृष्ठ संकल्पना

विलास पवार

सरिता ग्राफिक्स, अमरावती

■ अक्षरजुळवणी

सरिता ग्राफिक्स,

कठोरा रोड, अमरावती

■ Price : 200/-

ISBN-978-93-91305-39-0

सुचना:- सदर अंकामध्ये प्रकाशित झालेल्या लेखास, संपादक, प्रकाशक, मालक, मुद्रक जबाबदार राहणार नाही. या अंकामध्ये प्रकाशित झालेले लेख लेखकाचे त्यांचे वैयक्तिक मत आहे.

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	लेख — लेखक	पृ.क्र.
1	आधुनिक भारत के निर्माता — **डॉ. सविता व्ही. रूक्के**	1
2	महात्मा गांधी और अहिंसा — **Dr. Narendra Vasant Raghatate**	5
3	महात्मा गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा — **डॉ. ज्योती व्हि. कवठे (रणदिवे)**	15
4	ग्रामराज्य रामराज्य गॉधीजी के विचार — **डॉ. स्मिता दि. जोशी**	25
5	Mahatma Gandhi And His Thoughts About Environment — **Dr.RakeshVasantrao Patil**	28
6	Gandhi's Concept Of Gram Swaraj — **Dr. Arun M Rakh**	35
7	Mahatma Gandhi's Economic Thoughts and Its Current Usefulness — **Dr. Aslam Dastagir Attar**	43
8	World Peace And Mahatma Gandhi — **Dr.Mohan Sudhakar Mendhe**	51
9	Fragmentation of Religious Unity in Contemporary India: Emphasis on Syncretic Religion of Mahatma Gandhi as a Way Forward — **Soumalya Ghosh**	57
10	Mahatma Gandhi's Thoughts On Concept Of Trusteeship — **Sudhir Kulkarni /Dr. Sonali Jadhav**	64
11	A Critical Study of Gandhian Model of Rural Development — **Prof. Dr. Kavita Gangadharrao Sonkamble**	71
12	Mahatma Gandhi: A Pioneer in Management Guru of Contemporary World — **Dr. S. K. More**	78

Scanned with CamScanner

13	Mahatma Gandhi's Thoughts On Swadeshi **Dr.Prashant S. Pagade**	85
14	Mahatma Gandhi as Peace Strategists **Dr. Sandeep Jagdale**	92
15	COVID-19 and Gandhian Principles **Sandip Tundurwar**	99
16	Revelance Of Gandhian Thoughts In The Globalised World **Dr Mallikarjun I Minch**	106
17	Mahatma Gandhi's Thoughts on Truth and Non-Violence **Dr. Sanjay G. Kulkarni**	114
18	Educational Thoughts of Mahatma Gandhi **Dr. Kale Ravindra Kondiram**	119
19	An Overview Of Mahatma Gandhi's Thoughts On Satyagraha **Dr. Piyush U. Nalhe**	129
21	Gandhi's Thoughts Of Self Reliant & Independence Through love And Nonviolence In Kanthapura **Dr.Prachi Sharad Patharkar**	137
21	Political Thoughts Of Mahatma Gandhi **Dr.Vikas B. Chandajkar**	143
22	Women Empowerment in India: A Gandhian Perspective **Harleen Kaur**	148
23	Gandhi's Thoughts on Education and His Voice on Women **Asst. Prof. Parag Hedaoo**	154
24	Mahatma Gandhi's Thoughts on Women Empowerment **Dr. Kulkarni Sanjay Ganpatrao**	160
25	An Analytical Study Of Gandhiji's Role In The Indian Independence Movement **Dr. Jayesh Vikram Padvi**	166

Scanned with CamScanner

Mahatma Gandhi Aur Ahimsa

महात्मा गांधी और अहिंसा

Dr. Narendra Vasant Raghatate
Assistant Professor HoD. Dept. of Philosophy
Shri Binzani City College,RTM Nagpur University,Nagpur
9822857575 ,Raghataten77@gmail.com

गोषवारा :

भारतीय धर्म में अहिंसा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। वेदो, उपनिषदों, स्मृतियों तथा दर्शन आदी में अहिंसा का वर्णन किया गया है। अहिंसा की सिधी परिभाषा याने हिंसा न करना। अहिंसा के प्रकार —१) शारीरिक अहिंसा २) वाचिक अहिंसा ३) बौद्धिक अहिंसा। जब मनुष्य को बौद्धिक अहिंसा प्राप्त होती है तो उसके व्दारा शारीरिक तथा वाचिक अहिंसा का पालन स्वत: होने लगता है। कभी—कभी तो जो अहिंसा प्रतीत होती है वह वास्तव में हिंसा होती है और जो हिंसा प्रतीत होती है वह अहिंसा होती है। दुसरे दृष्टिकोन से कही अहिंसा धर्म प्रतित होती है तो कही अधर्म। कही पर अहिंसा पुण्य है तो कही पर पाप। महर्शि पतंजली के योगदर्शन में तो अहिंसा को अनण्यसाधारण महत्व दिया गया है। जैन धर्म में तो अहिंसा का पालन बहुत उंचे स्तर पर किया जाता है। बौद्ध धर्म और दर्शन के प्रवर्तक भगवान बुद्ध स्वयं अहिंसक थे। देखा जाये तो गांधी की समस्त विचारधारा दो केंद्रित 'भावस्त्रोतों'' सें ही पनपी हैं। एक भाव है 'सत्य' तथा दुसरा है 'अहिंसा'। गांधी के लिये अहिंसा प्रेम का सर्वव्यापी नियम है जिससे समस्त प्राणी संचालित है। गांधीजी सत्य और अहिंसा के आपसी संबंधों को स्पष्ट कर रहे है। उन्हे वे एक ही सिक्के दो पक्ष कहते है। वे सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य मानते है और इस तरह से पवित्र साध्य की प्राप्ति हेतू साधन भी सच्चे और शुद्ध, अहिंसात्मक ही होने चाहिय ऐसा उनका मानना है। गांधी के नीतिदर्शन के साधन और साध्य की एकरूपता हम अमरीकी अर्थक्रियावादी दार्शनिक डीवी से कर सकते है। गांधी अहिंसा शब्द का

Scanned with CamScanner

प्रयोग भावात्मक तथा निषेधात्मक दोनो अर्थ में करते है। गांधी का कहना है की कुछ कुछ परिस्थिती में हिंसा का पूर्ण त्याग तो सम्भव नही है – जैसे श्वास लेने में। गांधी के मतानुसार अहिंसा का भावात्मक स्वरूप वस्तुतः प्रेम है। इसप्रकार गांधी के अनुसार अहिंसा कर्म की प्रेरणा है। आधुनिक युग में गांधी ने राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर बड़े विशाल रूप में अहिंसा का पालन स्वयं किया और अहिंसा के रास्ते पर चलने का दुसरों को उपदेश दिया। गांधी का कहना है की समाज में फैले अन्यास, भय, अत्याचार आदि का निवारण अहिंसा के पालन से किया जा सकता है। यदी हम गांधी के अहिंसा के पथपर चलते है तो समाज और राष्ट्र में शांति, भाईचारा, सलौख्य बना रहेगा और दुनिया में यह एक प्रचार होगा की अहिंसा परमो धर्म।

प्रस्तावना :

भारतीय धर्म में अहिंसा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। वेदो, उपनिषदों, स्मृतियों तथा दर्शन आदी में अहिंसा का वर्णन किया गया है। अहिंसा की सिधी परिभाषा याने हिंसा न करना। सामान्य तौर यह कह सकते है की किसी के प्राणों का वियोग न करना अहिंसा है। योगदर्शन में व्यासमुनी कहते हैं, ''सर्व प्रकार से सर्वकाल में सर्व प्राणियों के चित्त में भी द्रोह न करना अहिंसा कहलाती हैं।''[१]

अहिंसा के प्रकार :–

१)शारीरिक अहिंसा :– इसका अर्थ है की शरीर के स्तर पर हिंसा न करना। किसी के प्राणों का वियोग न करणा, बल्कि ऐसा व्यवहार करना जो शारीरिक स्तर पर सुख तथा शांति प्राप्त कराए।

२)वाचिक अहिंसा :– इसका अर्थ है की वाणी व्दार किसी को कष्ट न पहुँचाये, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग दुसरो के लिये ना करे बल्कि ऐसे शब्दो का प्रयोग करें जिससे नम्रता, प्रसन्नता का भाव निर्माण हो।

३)बौद्धिक अहिंसा :– इसका अर्थ है की, अपनी बुद्धि में भी किसी को किसी प्रकार का कष्ट अथवा हानी पहुँचाने का विचार न रखना बल्कि सबका सुख, लाभ, भलाई हो ऐसा सोचना ही बौद्धिक अहिंसा है।

Scanned with CamScanner

जब मनुष्य को बौद्धिक अहिंसा प्राप्त होती है तो उसके व्दारा शारीरिक तथा वाचिक अहिंसा का पालन स्वत: होने लगता है। भवितू ''अहिंसा की सिद्धि होने पर उसके समीपवर्ती प्राणियों में भी बैर का अभाव हो जाता है।''[२]

कभी–कभी तो जो अहिंसा प्रतीत होती है वह वास्तव में हिंसा होती है और जो हिंसा प्रतीत होती है वह अहिंसा होती है। इसलिए यह आवश्यक बन जाता है की अहिंसा का स्वरूप वास्तव में है क्या? उदाहरण के रूप में माँ बच्चे का ताडण करती है तो, उस समय बच्चे को कष्ट होता है परंतु माँ की यह ताडण बच्चे के कल्याण हेतू अथवा उसके सुख के हेतु होती है। बाहयरूप से देखने पर यहा माँ की हिंसा दिखाई देती है परंतु वास्तवमें वह हिंसा न होकर अहिंसा होती है। इसी प्रकार गुरू शिष्य का ताडण उसके कल्याण के लिए करता है। डॉक्टर रोगी का ऑपरेशन उसे उस पिडा या दु:ख से छुडाने के लिये करता है। अत: उपर्युक्त उदाहरणों में ये सब अहिंसा काही पालन करते है और यदी यह इस तरह से व्यवहार नही करते तो वह हिंसा कहलाती। इस का मतलब माँ, गुरू, डॉक्टर का उद्देश दु:ख देने का होता तो उनका वह व्यवहार हिंसा कहलाता।

दुसरे दृष्टिकोन से कही अहिंसा धर्म प्रतित होती है तो कही अधर्म। उदाहरण के तौर पर एक सेनानी युद्ध के समय जीतने अधिक दुश्मनों को मारेगा वह उतनाही श्रेष्ठ कहलायेगा। ऐसा करना उसका कर्तव्य है, धर्म है और यदि वह ऐसा नही करता तो वह कायर कहलायेगा या अधर्मी। महाभारत मे श्रीकृष्ण अर्जुन से युद्ध करने के लिये कहते है और वह यह भी कहते है की ऐसा करना उसका धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कंस, शिशुपाल आदि अनेक आततायियोंको मारा था। श्री रामचंद्र जी ने स्वयं रावण का वध किया था। ऐसा करके उन्होंने अपने धर्म का पालन किया था।

उपर्युक्त तत्थ्यों से यह सिद्ध होता है की कही पर अहिंसा पुण्य है तो कही पर पाप। एक सन्यासी जितना अहिंसक हो सकता है उतना एक किसान या मजदुर चाहते हुये भी नही हो सकता। वैसे देखा जाये

Scanned with CamScanner

तो, मनुष्य पूर्णत: अहिंसक भाव ला सकता है परंतू व्यवहार से यह अशक्य प्राय है। उससे किसी न किसी प्रकार से कुछ न कुछ हिंसा होही जाती है। पूर्ण अहिंसा तो एक आदर्श है।

न्यायदर्शन में कहा गया है की, ''योगशास्त्र में वर्णित यम, नियमों व्दारा युक्ति की योग्यता प्राप्त करने का उपाय करना चाहिए।''[३] यमों का मूल तो अहिंसा ही है। सांख्यसूत्र के भाष्यकार आचार्य विज्ञान भिक्षू ने कहा है की, ''जिस प्रकार दृष्ट साधनों में हिंसा पाप का कारण होती है जैसे ही यज्ञादि कार्यो में भी की गयी हिंसा पाप की लिए होती है।''[४] आचार्य ईश्वर कृष्ण कहते है की, ''हिंसा सदा ही पाप और दु:ख के लिये होती है।''[५]

महर्षि पतंजली के योगदर्शन में तो अहिंसा को अनण्यसाधारण महत्व दिया गया है। पातंजल अष्टांग योग का आधार यम और नियम है, इसमें यमों का आधार ही अहिंसा है। शेष यम अहिंसा की पुष्टि के लिये ही है।

जैन धर्म में तो अहिंसा का पालन बहुत उंचे स्तर पर किया जाता है। बौद्ध धर्म और दर्शन के प्रवर्तक भगवान बुद्ध स्वयं अहिंसक थे। भगवान बुद्ध को दया और करूणा की मूर्ति माना गया है जिसका भाव अहिंसक होना है।

देखा जाये तो गांधी की समस्त विचारधारा दो केंद्रित 'भावस्त्रोतों'' सें ही पनपी हैं। एक भाव है 'सत्य' तथा दुसरा है 'अहिंसा'। दोनो भावो को वे एक विशेष अर्थ में अभिन्न भी कहते है क्योंकी एक का विचार अनिवार्यत: दुसरे तक ले ही जाता है। उनकी स्विकारोक्ति है की सत्य की तलाश में उन्हें अहिंसा का विचार भी प्राप्त हो गया। सत्य पर किये गये अपने प्रयोगों से वे अपने आप 'अहिंसा' पर आ गये। वे कहते है, "I have nothing new to reach the world. Truth and Non-violence as old as the hills. All I have done is to try experiments in both on as vast a scare as I could. In doing so I have sometimes erred and learnt by my errors. Life and its problems have thus become to me so many experiments in the practice of truth and

Scanned with CamScanner

non-violence..... In fact it was in the course of my pursuit of truth that I discovered Non-violence."[6]

गांधी के लिये अहिंसा प्रेम का सर्वव्यापी नियम है जिससे समस्त प्राणी संचालित है। परमसत्य की एक अभिव्यक्ति होने के नाते अहिंसा में गांधीदर्शन में एक तत्त्वमीमांसात्मक स्थान प्राप्त है। अहिंसा और सत्य एक दुसरे से अपृथक है और एक दुसरेकी पूर्व मान्यताएँ है। वे परस्पर इतने अंतर व्याप्त है की उन्हे एक–दुसरे से स्वतंत्र करना व्यावहारिक रूप से असंभव है। सत्य और अहिंसा का समीकरण भारतीय तत्त्वमीमांसात्मक चिंतन में गांधी का एक भौतिक योगदान है।

"Ahimsa and Truth are so interwined that it is practically impossible to disentangled and separate them. They are like the two sides of a coin, or rather a smooth unstamped metallic disc. Who can say which the obverse is and which reverse? Ahimsa is the means, Truth is the end. Means to be means must always be within our reach, and so Ahimsa is our supreme duty. If we take care of the means, we are bound to reach the end sooner or later."[7]

उपरोक्त पंक्तियों व्दारा ऐसा दिखाई देता है की गांधी सत्य और अहिंसा के आपसी संबंधों को स्पष्ट कर रहे है। उन्हे एक ही सिक्के दो पैलु कहते है। अधिक उपयुक्त उपमा के तौर पर एक दोनो और से चिकने तथा एक जैसे दिखाई देनेवाले धातु डिस्क की देते है, जिसमें यह कहना कठिन हो कि यह किस और सिधा है और किस ओर उल्टा। पुन: वे अहिंसा को साधन कहते है, तथा सत्य को साध्य। साध्य उद्येश होता है, लक्ष होता है, अत: दुर होता है, किंतु साधन साधन इसलिये है की वह हाथ में है, अपने पास है। अत: उचित ढंग से साधन का उपयोग हो तो लक्ष प्राप्त होगा ही।

गांधीजी के लिये अहिंसा, सत्य की अनेक अभिव्यक्तियों में से एक अभिव्यक्ती होने के नाते एक सत्तामूलक धारणा है। अत: यह नीतिशास्त्र का सर्वोच्च साध्य है। किंतू यह साधन भी है जिससे हम सत्य तक पहुँच सकते है। गांधी के नीतिशास्त्र में साधन और साध्य की

Scanned with CamScanner

एकरूपता उतनी ही मौलिक है और महत्वपूर्ण है जितना उनका सत्य और अहिंसा का सिद्धांत। अत: गांधी ने साधन शुद्धता पर भी बल दिया है। वे कहते है की अपने साधनके अनुरूप ही हम अपना लक्ष साध सकते है। अपवित्र साधन सदैव ही साध्य को अपवित्र कर देगा। असत्य से हम सत्य तक नही पहुँच सकते।

वे सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य मानते है और इस तरह से पवित्र साध्य की प्राप्ति हेतू साधन भी सच्चे और शुद्ध, अहिंसात्मक ही होने चाहिये। यदी हिंसा से हम सत्य प्राप्त करने का प्रयास करते है तो हमे हमारा सत्य या ईश्वर कदापी प्राप्त नही हो सकता। और ऐसा करते है तो सच्चे रूप में वो सत्य भी नही होगा जिसे हमने अहिंसा व्दारा प्राप्त किया है। इसी कारण गांधी सत्य की सिद्धि में अहिंसा को राजमार्ग मानते है।

गांधी के नीतिदर्शन में साधन और साध्य की एकरूपता हमें अमरीकी अर्थक्रियावादी दार्शनिक डीवी की याद दिलाती है। डीवी स्वयं गांधी की तरह ही साधन और साध्य को निकटवर्ती रूप में प्रस्तुत कर, अपेक्षित लक्ष की प्राप्ति के लिये माध्यम के महत्व पर बल देते है। उनके अनुसार भी साधन से साध्य तक एकसुत्रता है। साध्य की प्राप्ति के लिये साधनों की उपेक्षा करना डीवी मूर्खतापूर्ण मानते है। लक्ष की सिद्धि के लिये माध्यम का सही ज्ञान अत्यावश्यक है। लक्ष को माध्यम से पृथक करना, डीवी के अनुसार अविवेकपूर्ण है। [८]

गांधी के अनुसार अहिंसा सत्य के लिये है। वे कहते है, "मै तो प्रत्यक्ष ईश्वर का दर्शन करना चाहता हूँ। सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर को पहचानने का मेरे निकट तो एकही अचूक साधन अहिंसा है, प्रेम है।"[९] गांधीजीके अनुसार, "अहिंसा उस ज्योत का नाम है जिससे सत्य का दर्शन होता है।"[१०] अहिंसा ही सत्येश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा–सा मार्ग है।"[११]

एक बात तो हैं की गांधी से पहले अहिंसा को कभी भी सत्तामूलक नही समझा गया। गांधी अहिंसा को न केवल एक नैतिक सद्गुण मानते है बल्कि वे उसे परमसत्ता की एक अभिव्यक्ति भी

Scanned with CamScanner

स्वीकार करते है। उनके लिये समस्त जगत् अहिंसा पर आधारित है। अहिंसा न केवल मनुष्य में निहित है बल्किं वह तो संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। वह जगत का अन्तर्निहित सत्य है। वह व्यावहारिक जगत की एक संकेंन्द्रित और सषक्तशील शक्ति है।

स्पष्ट है की ऐसी शक्ति केवल नकारात्मक नही हो सकती। अहिंसा शब्द निषेधात्मक 'अ' उपसर्ग से आरम्भ होता है जिसका अर्थ होता है दुसरे प्राणियों की हानि या हत्या न करना। किंतू गांधी अहिंसा के शाब्दिक अर्थ से कही आगे बढ़ जाते है। उनके नीतिचिंतन में अहिंसा अकर्म का सिद्धांत न होकर एक ऐसी सक्रिय शक्ति बन जाती है जो सर्वोच्च है। गांधी इसे आत्मबल कहते है।

गांधी अहिंसा के संबंध में बौद्ध और खासकर जैन विचार से अत्याधिक प्रभावित है। जैन धर्म में अहिंसा की अनुशंसा बड़े ही कठोर ढंग से की गयी है। गांधी को यह अवगती थी कि सामान्य जीवन में सामान्य मनुष्यों के लिये अहिंसा का इस कठोर रूप में पालन न तो व्यावहारिक है और न संभव है। अत: वे अहिंसा के निषेधात्मक शर्तो को उतना कठोर नही बना देते जितना कठोर जैन धर्म में बनाया गया है। गांधी अहिंसा शब्द का प्रयोग भावात्मक तथा निषेधात्मक दोनो अर्थ में करते है। गांधी का कहना है की कुछ कुछ परिस्थिती में हिंसा का पूर्ण त्याग तो सम्भव नही है – जैसे श्वास लेने में, खाने में, पिने में आदी। इन क्रियाओं में कुछ जीवों का हनन होता जाता है, चलते वक्त किडे, मकोडें पैरोंतलें आकर मर जाते है। तथा उनसे बचना प्राय: असंभव है। इसके अतिरिक्त गांधी यह भी मानते है की कुछ विशेष परिस्थितीयों में हिंसा भी अनुशंसित हो सकती है। मान लें एक पागल बन्दूक लेकर लोगों की हत्या करता चल रहा है, यदि उसे अन्य ढंगों से पकडा नही जा रहा है, और वह हत्या करता ही जा रहा है, तो उसकी हत्या अनुशंसित हो सकती है। "Suppose a man runs amuck and does furiously about sword in hand, and killing anyone that comes in his way and no one dares to capture him live. Anyone win dispatches the lunatic, will earn the gratitude of the community and be regarded as a

Scanned with CamScanner

benevolent man''[12] इस विचार को गांधी ने बड़े ही स्पष्ट रूप में स्वीकारा भी है, तथा उसकी अनुशंसा भी की है।

गांधी के मतानुसार अहिंसा क्षेत्र असिमित है। खाने–पिने, नहाने–धोने तक में गांधी ने अहिंसा बतलाई है। अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तक फैली हुई है।

अत: हम कह सकते है की 'हत्या' अथवा 'किसी को पिडा पहुचाना' इसे 'हिंसा' तभी कहा जा सकता है जब इसे 'हिंसा' बनानेवाली कुछ शर्त उपस्थित हों। ये शर्ते है क्रोध, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, व्दैष, स्वार्थ, बुरे अभिप्राय तथा ऐसी ही अन्य मानसिक वृत्तियाँ। इन्ही वृत्तीयों के अंतर्गत की गयी 'हत्या' या 'पिडा' 'हिंसा' के उदाहरण कहे जा सकते है। इसका का सिधा अर्थ है की 'अहिंसा' ऐसी मानसिक वृत्तियोंसे सर्वथा उपर है, मुक्त है।

किंतु यह तो अहिंसा का निषेधात्मक आयाम है, अहिंसा में क्या नही रहता – इसका संकेत देता है। लेकिन गांधी के लिये अहिंसा का भावात्मक पक्ष अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है। उनके लिये अहिंसा का मतलब मात्र हिंसा का त्याग नही हैं, इसके अंतर्गत भावात्मक लक्षण तथा मनोवृत्तियाँ आती है, अन्य जीवों के प्रति एक विशेष प्रकार के भाव की बात होती है। वे कहते है की मानव में 'मानवीयता' एक मूल एवं अनिवार्य लक्षणों में अहिंसा है। अहिंसा मानव जाती के जीवन का एक मूल नियम है।

गांधी के मतानुसार अहिंसा का भावात्मक स्वरूप वस्तुत: प्रेम है। प्रेम एक आन्तरिक एकता की भावना है। प्रेम में अपने प्रिय से एक ऐक्य – एक तादात्म्य स्थापित होता है। अत: प्रेम का अर्थ है क्रोध, बदले की भावना, मनोमालिन्य, व्देश आदिसे मन को मुक्त रखना। गांधी स्विकारते है की प्रेम कोई सरल अभिवृत्ती नही है। घृणा, ईर्ष्या सरल है, प्रेम के लिये आन्तरिक सशक्तता की आवश्यकता होती है। इसीलिये निर्बल तथा कमजोर व्यक्ति अहिंसा का प्रयोग नही कर सकता।

इसप्रकार गांधी के अनुसार अहिंसा कर्म की प्रेरणा है। यह उदासीनता या निष्क्रियता की मनोवृत्ती नही है। अहिंसा का पालक

Scanned with CamScanner

वस्तुत: हर क्षण अहिंसा का पालन करता ही रहता है, क्योंकी इसका पालन सतत संकल्प, चिन्तन तथा कर्मो के व्दारा होता है। और इसिलिये वे कहते है की, अहिंसा का पालन तबतक संभव नही है, जबतक ईश्वर में अटूट आस्था न हो। अहिंसा पालन के लिये असिम शक्ति की आवश्यकता होती है और वह तभी संभव है जब ईश्वर में पूर्णरूपसे सक्रिय, सजीव तथा अटूट आस्था हो। और यह ईश्वर में आस्था ही मानवता के प्रति प्रेम में परिणत हो जायेगा।

आधुनिक युग में गांधी ने राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर बड़े विशाल रूप में अहिंसा का पालन स्वयं किया और अहिंसा के रास्ते पर चलने का दुसरों को उपदेश दिया। इसीलीये लोग उन्हें अहिंसा के पुजारी मानते थे। बहुतसे लोग तो ऐसा भी मानने लगे थे की गांधी ने ही संसार को अहिंसा का सिद्धांत दिया जबकि यह सिद्धांत तो अति प्राचिन है।

गांधी का कहना है की समाज में फैले अन्यास, भय, अत्याचार आदि का निवारण अहिंसा के पालन से किया जा सकता है। अन्याय, शोषण आदि को दूर करने के लिये हिंसा का सहारा लेना अनुचित है। बैर से बैर शांत नही होता है। युद्ध से युद्ध का जन्म होता है। अत: अहिंसा को संगठित करना होगा। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा को प्रतिष्ठित करके सब प्रकार की हिंसाओं को दूर किया जा सकता है। ''जीवन की प्रत्येक विभूति में अहिंसा का उपयोग है।''[१३]

निष्कर्ष :

इस प्रकार हम देखते है की अहिंसा प्राचिन समय से धर्म, दर्शन का विषय चला आ रहा है। भारत में संत महात्मा, योगाभ्यासी आदि अहिंसा का पालन करते चले आये हैं। गांधीजी ने व्यापक स्तर पर सामाजिक और राजनैतिक जीवन में अहिंसा का उपयोग किया। अहिंसा के संबंध में उनके अधिकतर विचार तो अहिंसा की प्राचिन मान्यताओं से मेल खाते है पर कही–कही कुछ अलग है। और यदी हम गांधी के अहिंसा के पथपर चलते है तो समाज और राष्ट्र में शांति, भाईचारा, सलौख्य बना रहेगा और दुनिया में यह एक प्रचार होगा की अहिंसा

Scanned with CamScanner

परमो धर्म। क्योंकि यही आज की मांग है। और यदी हम ऐसा करते है तो दुनिया में शांती, सुख, भाईचारा बना रहेगा ऐसा मैं सोचना हूँ।

संदर्भ सूची

१)तत्रहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोहः। व्यासभाष्य, मो.सू.२/३०.

२)अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्तिधौ वैरत्यागः।। मो.सू. २/३५

३)तदर्थ यम नियमाभ्यासात्मलं संस्कारो योग्याच्चध्यात्मविध्युपायैः। नां.सू. ४/२/४६

४) सदृश्टोपायवदेवाषुध्दया हिंसादि पापेन विनाषीसातिशयफलकत्वेन च युक्त इत्यर्थः। (सांख्यप्रवचन भाष्य १/६).

५) दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षमातिशययुक्तः।
तव्दिपरीतः श्रेयान् व्यक्ता व्यक्तज्ञ विज्ञानात्।। (सांख्यकारिका—२)

६) बोस एन. के. — 'सिलेक्षन फ्रॉम गांधी' एडीटेड, पृ. — १३.

७) पुनष्च — पृ. १३—१४.

८) बंदिश्टे डी. डी. डॉ. और शर्मा रमाशंकर डॉ. — भारतीय दार्शनिक निबंध (व्दितीय संषोधिन परिवर्धित संस्करण) मध्यप्रदेष ग्रंथ अकादमी, भोपाल, १९९१ (पृ. — ३७१)

९) हिन्दी नवजीवन साप्ताहिक पत्र दिनांक ६—४—१९२४.

१०)तद्देव दिनांक २६—१२—१९२४.

११)हरिजन सेवक, साप्ताहिक पत्र दिनांक १०—११—१९३३.

१२)यंग इंडिया साप्ताहिक दिनांक ४—११—१९२६.

१३)गांधी सेवा संघ सम्मेलन, दिनांक २०—०४—१९३७.

१४)गांधी दर्शन मीमांसा.

१५)कृपलानी जे. बी. — गांधी, हिज लाईफ एंड थॉट, न्यु दिल्ली पब्लिकेशन डिवीजन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, १९७५.

१६)गांधी मोहनदास करमचंद — गांधी से महात्मा गांधी तक, पराग प्रकाशन.

१७)गांधी मोहनदास करमचंद — सत्य के प्रयोग.

१८)शर्मा कार्यानन्द — भारतीय दर्षन के मूल संप्रत्यय, २०१६.

Scanned with CamScanner